तर्ज--सौ बार जनम लेगें

होगा ना हुआ कोई,जैसे मेरे धामधनी
आकर बैठे दिल में,किया दिल को अर्श धनी

1--बेशक हम भूले थे तूने आके जगाया है
देकर वाणी अपनी हमें अपना बनाया है
मैं तो धनी कुछ भी नही सब तेरी मेहर है धनी

2--तेरे इश्क को हम भूले निसबत ना पहचानी
तुम आये भेष बदल सुध अपनी सब दीन्ही
चौदह तबको मे नही तुमसा मेरे धाम धनी

3-तेरी मेहर से हम जाने तुम सेहेरग से हो नजीक
तुम हमसे जुदा नही ये दिल को हुआ तहकीक
सब फन्दे छुड़ा दीन्हे मेहरबां मेरे धनी

Nijanand App